भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए २६ अक्टूबर से १ नवंबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(५० वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/जिला	अक्टूबर-नवंबर, २०१५ माह में वर्षा की स्थिति (मि.मी)							साप्ताहिक परामर्श
दिनांक	२६	२७	२८	२९	३०	३१	०१	
पंजाब								भठिनडा जिले में फसल फलन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। फसल में *दिगेरा आर्वेनसिस* तथा खबल घास प्रमुख खरपतवार हैं। पिछले सप्ताह की तुलना में इस सप्ताह सफ़ेद मक्खी का प्रकोप कम हुआ है जो कि रात्रीकालीन कम तापमान तथा अधिक आद्रता से जुडा है। भठिनडा, मनसा और आस-पास के जिलों में जीवाणु पत्ती धब्बा तथा कपास पर्ण कुंचन विषाणु का प्रकोप देखा जा रहा है। फसल पर रोगों के प्रकोप विशेष रूप से जीवाणु पत्ती धब्बा के लिए नियमित निगरानी रखना आवश्यक है।
भटिंडा	4	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	5	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	5	0	0	0	0	0	0	
मानसा	4	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								हरियाणा में फसल गूलर खुलने कि अवस्था में है। *जी. आर्बोरियम* तथा *जी. हिर्सुटम* कपास में कपास चुनाई का कार्य प्रारंभ हो चुका है। जैसिड तथा फूलकीट की संख्या अत्यंत कम है। जैसिड की संख्या 0-3 प्रति 3 पत्तियां, सफ़ेद मक्खी की संख्या 10-22 पति 3 पत्तियाँ तथा फूलकीट की संख्या शून्य प्रति 3 पत्तियाँ नोट की गई। लगभग सभी गूलरों के खुलने और कपास चुनाई कार्य शुरू होने के कारण सफ़ेद मक्खी के नियंत्रण के लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। किसानों को सलाह दी जाती है कि साफ-सुथरी कपास चुनें। साफ-सुथरी कपास को चिपचिपी कपास से अलग रखें। दोनों तरह की कपास को एक साथ न मिलाएँ। पहली चुनाई की कपास को भी अलग भण्डारित करें। लगभग एक-तिहाई गूलर खुलने के बाद फसल में सिंचाई न करें। कपास सड़े हुए गूलरों से तथा सुबह तड़के जल्दी भी न चुनें। सूक्ष्मजीवों के नुकसान से बचाने के लिए चुनी हुई कपास को सुखाकर भण्डारित करें।
सिरसा	4	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0-	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान								राजस्थान में फसल पुष्पन तथा गूलर खुलने की अवस्था में है। सनवा घास (*इकाइनोक्लोआ* प्रजाति), मोथा (*साइपेरस* प्रजाति), दूब घास (*सायनोडन* प्रजाति) तथा साँथी (*ट्राएंथेमा* प्रजाति) जैसे खरप तवारों का फसल में प्रकोप है। रस चूसक कीटों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर, सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर के करीब दर्ज की गई है। *हेलिकोवर्पा* अमेरिकन सूँडी बीटी रहित कपास में कुछ खेतों में आर्थिक हानि स्तर से ऊपर रिपोर्ट की गई है। फसल में इस समय रोगों का प्रकोप नहीं है।
हनुमानगढ़	4	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	10	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	3	0	0	
उड़ीसा								फसल इस समय गूलर विकास तथा परिपक्वावस्था में है। रस चूसक कीट, *स्पोडोप्टेरा*, धब्बेदार तथा अमेरिकन सूँडियों का प्रकोप दर्ज किया गया है। जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर दर्ज की गई है। कुछ स्थानों पर जीवाणु पत्ती धब्बा रोग का प्रकोप देखा गया है। सुबह 10.00 बजे के बाद ही पूरी तरह से खुले हुए गूलरों से कपास चुनें। पहली चुनाई की कपास को अलग रखें तथा भण्डारण से पहले सुखा लें। बचे हुए गूलरों की उचित वृद्धि के लिए फसल पर 1.5% डी. ए.पी. के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का छिडकाव करें। मुरझान तथा लाल पत्ती रोग की समस्या से निपटने के लिए परिशिष्ट में दी गई सिफ़ारिशों को अमल में लाएँ। कपास की आधीक उपज लेने तथा अधिक गूलर धारण के लिए डी. ए.पी. तथा
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	0	
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	

								सूक्ष्म पोषकतत्वों का अनुप्रयोग इस शीर्ष पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में सहायक होगा। लाल पत्ती रोग के प्रबंधन के लिए फसल पर यूरिया 10 ग्रा.+10ग्रा. मेग्नीशियम सल्फेट प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।
गुजरात								फसल पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। बीजी , बीजी II तथा गैर बीटी कपास के जूनागढ़ से हरे गुलरों के एकत्र किए गए नमूनों में क्रमाश: 56%, 24% तथा 25% गूलर क्षतिग्रस्त पाए गए तथा 24% , 14% तथा 23% गूलरों में सूँ डियां पाई गई। गुलरों के कोष्ठक क्रमश: 12% , 13% तथा 27% क्षतिग्रस्त दर्ज किए गए। किसानों को सलाह दी जाती है कि नियमित निगरानी इस प्रकार करें: गुलाबी सूँडी: इस सूँडी का प्रकोप इस सप्ताह प्रारंभिक हानि अवस्था में है जो नवंबर तथा दिसंबर में और बढ़ेगा। इस सूँडी की निगरानी करने के लिए किसान भाई फसल में फीरोमोन ट्रैप 5-6 प्रति हेक्टर की संख्या में लगाएँ। 8 पतंग प्रति ट्रैप प्रति रात्री सतत 3 रातों तक पाए जाने की आर्थिक हानि सीमा पर पहुँचने पर और अथवा 10% क्षतिग्रस्त गूलर विकासशील सूंड़ियों सहित पाए जाने पर क्वीनालफास अथवा थायोडीकार्ब का फसल पर छिड़काव इस सप्ताह में एक बार तथा नवंबर में एक बार पाइरेथ्राईड विशेष रूप से लेम्डा-साइहेलोथ्रिन का छिड़काव करें। कीटनाशकों के किसी भी मिश्रण का प्रयोग कभी न करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी की संख्या बढ़ सकती है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल को दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। इसे अगले वर्ष 2016 तक खेत में न रखें। गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम करने तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूंड़ियों में प्रतिरोधकता निर्माण को कम करने के लिए ऐसा करना आवश्यक है। खेतों की मेढ़ों पर पिछले वर्ष की कपास की फसल की सूखी लकड़ियो के ढेर दिखाई देते हैं। इन्हें तुरन्त नष्ट करें। भण्डार में अथवा घरों मेंकपास का पुराना क्षतिग्रस्त बीज गुलाबी सूँडी के पतंग के वाहक का कार्य कर सकता है। अत: पुराने क्षतिग्रस्त बीज को तुरंत नष्ट कर दें।
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	7	4	0	0	0	0	फसल पुष्पन, प्रारंभिक कली निर्माण , गूलर निर्माण तथा गूलर खुलने की अवस्था में है। जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि के स्तर से ऊपर तथा एफिड और फूलकीट की संख्या आर्थिक हानि स्तर से नीचे दर्ज की गई है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि आवश्यक होने पर परिशिष्ट में दिए गए नियंत्रण उपायों को अपनाएँ।
धार	0	5	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	4	13	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	3	5	0	0	0	पुष्पन की दूसरी बहार की शुरुआत हो रही है। बीटी कपास में लाल पत्ती रोग देखा जा रहा है। लाल पत्ती रोग के लिए अधिक संवेदनशील संकरों की पहचान करके किसानों को उनकी खेती अगले वर्ष न करने की सलाह दी जाती है। हालांकि अच्छी उपज देने वाले संकरों की खेती कर सकते है। किसान लाल पत्ती रोग की निगरानी करते रहें, और आवश्यकतानुसार इसके प्रबंधन के उपाय करें। सफेद मक्खी की संख्या बढ़ रही है। कहीं-कहीं पत्ती धब्बा रोग देखा जा रहा है। अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। रस चूषक कीटों के लिए छिड़काव न करें। पुष्पन अवस्था में 2.0% यूरिया अथवा 2.0% डी.ए.पी. के साथ और गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया और 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट के साथ संरक्षक सिंचाई करें। फीरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। इस सूँडी के पतंग की संख्या अथवा गूलर क्षति आर्थिक हानि स्तर पर पहुँचने पर सिफारिश किए गए नियंत्रण उपाय करें। गुजरात से लगे हुए जिलों में तथा जिन खेतों में पिछली फसल पिछले मार्च/अप्रैल , 2015 तक रखी गई थी , उन खेतों में बी.जी. , बी.जी.।। तथा गैर बीटी कपास में हरे गुलरों का निरीक्षण व निगरानी भी करते रहें। लाल पत्ती रोग परभणी जिले के
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	8	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	4	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	16	10	0	0	0	0	
जलगांव	0	16	10	0	0	0	0	

जालना	0	0	0	0	0	0	0	67.65% गावों में रिपोर्ट किया गया। इसके बाद यह रोग अहमदनगर 44.12% गावों में, धुले जिले के 41.66% गावों में , यवतमाल के 31.27% गावों में, चन्द्रपुर के 30.26% गावों में , बुलढाणा के 26.92% गावों में , अमरावती के 19.71% गावों में , औरंगाबाद के 10.55% गावों में , बीड के 9.52% गावों में , नागपुर जिले के 4.82% गावों में , जालना के 7.20% गावों में, नांदेड के 5.38% गावों में, अकोला के 5.24% गावों में तथा वर्धा जिले के 2.91% गावों में दर्ज किया गया।
औरंगाबाद	0	8	5	0	0	0	0	
तेलंगाना								फसल पुष्पन से चुनाई अवस्था के मध्य है। कम नमी तथा दिन के अधिक तापमान के कारण पौधे पीले पड़ गए है। जहाँ संभव है उन खेतों में नत्र तथा पोटाश उर्वरकों की दूसरी व तीसरी मात्रा दें। पौधों के पीले पड़ने और पत्तियों के लाल होने की समस्या से निपटने के लिए दो बार 7 से 10 दिनों के अंतराल में फसल पर 1-2% डी.ए.पी. अथवा 2% पोटेशियम नाइट्रेट जैसे पोषकतत्वों का छिड़काव करें। रस चूषक कीटों में जैसिड की संख्या 0.2 से 1.2 प्रति 3 पत्तियाँ , सफेद मक्खी 1.0 से 1.2 प्रति 3 पत्तियाँ, फूलकीट 0.2 से 2.8 प्रति 3 पत्तियाँ तथा एफिड की संख्या 0.5 से 2.4 प्रति 3 पत्तियाँ रिकार्ड की गई। *राइजोक्टोनिया* जड़ गलन की रोकथाम के लिए कॉपर आक्सीक्लोराईड @ 1.0 मिली./ लीटर अथवा मेन्कोजेब + कार्बेंडेजिम 2.0 ग्रा./लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। अधिक तापमान के कारण रस चूषक कीटों तथा *स्पोडोप्टेरा* का प्रकोप देखा जा रहा है। जैसिड तथा दूसरे रस चूषक कीटों के नियंत्रण के लिए परामर्शी के परिशिष्ट में दी गई सिफारिशों को अमल में लाएँ। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए निंबोली अर्क @ 5.0% (अर्थात 10 किलो नीम पाउडर का अर्क प्रति एकड़) के दर से फसल पर छिड़काव की सिफारिश की जाती है। *स्पोडोप्टेरा* की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार नोवाल्यूरोन @1.0 मिली./लीटर अथवा ल्यूफेन्यूरोन @ 1.25 मिली./लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
कारिंगर	0	0	0	0	0	0	0	
खम्मन	0	0	0	3	0	0	0	
करीमनगर	0	0	0	0	0	0	0	
नालगोंडा	0	0	0	0	5	0	0	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	0	
प्रकासम	0	0	0	8	7	0	0	
कर्नाटक								अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में अगेती फसल 50% से भी अधिक खुले हुए गुलरों के साथ पहली चुनाई की अवस्था में है। ओस से भीगी कपास की चुनाई सुबह जल्दी न करें। कपास का भण्डारन करने से पहले उसे पूरे दिन सुखाएँ। पहली चुनाई की कपास की गुणता बेहतर होने और उसका भाव लेने के लिए कपास को अलग से भण्डारित करें। सिंचाई की सुविधा होने पर प्रत्येक सिंचाई के बाद फसल में हल्की सिंचाई दें। पिछेती फसल 19:19:19 घुलनशील उर्वरक का 1.0% (10 ग्रा./ली. पानी) के साथ 1.0% (10 ग्रा./ली. पानी) मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव लाल पत्ती रोग कम करने के लिए करें। कली झड़न रोकने के लिए इसके साथ प्लानोफिक्स (0.25 मिली./ली. पानी) का छिड़काव करें। कुछ जिलों में जीवाणु पत्ती धब्बा रोग भी दर्ज किया गया है जिसके प्रबंधन के लिए स्टेप्टोसाइक्लीन @ 0.5ग्रा./लीटर के साथ टैंक मिशित ब्लाइ ब्लाइटोक्स @3.0 ग्रा./लीटर का छिड़काव करें।
धारवाड़	0	0	0	0	0	0	0	
हवेरी	0	0	0	3	8	8	0	
मैसूर	0	4	4	5	18	13	10	
तमिलनाडु								फसल पुष्पन अवस्था में है। दूब घास , गाजर घास तथा *ट्राएंथेमा* पोर्टुलाकस्ट्र जैसे खरपतवारों की रोकथाम के लिए अंकुरण-पश्चात खरपतवारनाशकों का प्रयोग किया गया है। एफिड को छोड़कर (जिनकी संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम है) किसी अन्य नाशीकीट व रोगों का प्रकोप नहीं देखा गया है।
पेरंबलुर	0	0	0	7	3	13	14	
सेलम	0	0	0	20	8	8	9	
त्रिची	0	12	0	25	39	56	80	
विरुडुनगर	7	14	3	23	29	56	80	

आदर्श वर्षा	< 5	5-20	20-50	50-80	> 80
वर्षा मि.मी					